Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(2), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

ज्ञानपीठ पुरस्कृत लेखक विवेक शुक्ला की "दिवार में एक खिडकी रहती थी" लघुकथा में भाषाई चमत्कार

Dr. B. Laxmi Lecturer in Hindi HOD of Hindi

Dr.V.S.Krishna Government Degree College (A) Visakhapatnam

Mail ID – buddhalaxmidec77@gmail.com

समकालीन हिंदी साहित्य में लघुकथा एक ऐसा सशक्त माध्यम बन चुकी है जो थोड़े शब्दों में गहन अर्थ और प्रभाव पैदा करती है। विवेक शुक्ला, जो स्वयं एक सशक्त लघुकथाकार हैं, उनकी रचना "दीवार में एक खिड़की रहती थी" भाषा और संवेदना का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। सन 1996 में वाणी प्रकाशन में प्रकाशित "दीवार में एक खिडकी रहती थी" एक ऎसी रचना है, जिसमें पुनः पठन से रचना के उद्देश्य की कई परते खुलती ही जाती है ।कथा में साधारण जीवन जीने वाले एक निम्न मध्यवर्गीय पात्र रघुवर प्रसाद के दांपत्य जीवन में मधुरता की महिमा को प्रस्तुत किया गया है ।सांसारिक कश्मकश में उलझे संसाधनहीनता पर भी, पति-पत्नी खिडकी के पार जीवन के रंगीन सपनों में खुश रहते है । खिडकी, खुशियों और उम्मीद की खिडकी है।

यह कहानी केवल एक मानसिक स्थिति का चित्रण नहीं करती, बल्कि भाषा के प्रयोग द्वारा मानवीय संबंधों, सामाजिक यथार्थ, और अस्तित्ववादी प्रश्नों को भी उठाती है। विवेक शुक्ला की इस विशिष्ट रचना "दीवार में एक खिड़की रहती थी" में प्रयुक्त भाषा-शिल्प में ***प्रतीक, लाक्षणिकता, संवेदनात्मकता, संक्षिप्तता* और *ध्वनि-लयात्मक सौंदर्य* समाहित** है।

रचना का संक्षिप्त परिचय

"दीवार में एक खिड़की रहती थी" मूलतः एक प्रतीकात्मक कथा है जो किसी सामाजिक या मानसिक परिप्रेक्ष्य में बंद दरवाजे के बीच *संवाद, समझ, समावेश* और *आत्मिक स्पर्श* की संभावना को खिड़की के रूप में प्रस्तुत करती है। कहानी में दीवार और खिड़की न केवल भौतिक वस्तुएँ हैं, बल्कि वे *मानव-मन, सामाजिक विभाजन,* और *भावनात्मक संकुचन* के प्रतीक भी बन जाते हैं। यह एक प्रतीकात्मक कथा है, जिसमें दीवार का तात्पर्य एक बंद व्यवस्था, दूरी, अलगाव, और निष्क्रियता से है, जबकि खिड़की *संवाद, उम्मीद, संवेदना* और *रचनात्मक परिवर्तन* का प्रतीक है। लेखक ने इस संक्षिप्त कथा के माध्यम से समाज में मौजूद मानवीय संकोच, अलगाव और संभावनाओं को अत्यंत सूक्ष्मता से उकेरा है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(2), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

दीवार और खिड़की - प्रतीकात्मकता का चमत्कार

विवेक शुक्ला ने “दीवार” और “खिड़की” जैसे सामान्य शब्दों को प्रतीकों के रूप में बदल दिया है। दीवार समाज में उपस्थित *विभाजक रेखाओं* जैसे जाति, वर्ग, विचारधारा, धर्म आदि का प्रतीक बनती है, जबकि खिड़की - *संभावना, संवाद* और *समझ* का द्वार खोलती है।

- **दीवार**: सामाजिक विभाजन, वैचारिक दूरी, और आत्मिक संकोच का प्रतीक है।
- **खिड़की**: उजास, हवा, संवाद, और संभावनाओं का संकेत है।

“दीवार में एक खिड़की रहती थी, जिससे हवा और धूप भीतर आती थी। वह खिड़की अब बंद है, पर उसका होना अब भी महसूस होता है।” इस वाक्य में *भाषिक संकेत* का अद्भुत प्रयोग हुआ है - दीवार स्थिर और कठोर है जबकि खिड़की चंचल और जीवनदायिनी । यह यथार्थ और आशा के द्वंद्व को उजागर करता है।

"दीवार बहुत पुरानी थी... मगर उसमें एक खिड़की रहती थी, जिससे रोशनी भीतर आती थी।" यहाँ “रोशनी” केवल प्रकाश का पर्याय नहीं, बल्कि *ज्ञान, समझ, मानवता* और *संवेदना* का प्रतीक है।

दृश्य और ध्वनि बिम्बों का प्रयोग

कहानी में लेखक ने प्राकृतिक और मानसिक दृश्यों को मिलाकर *बिम्बात्मक भाषा* का प्रयोग किया है। भाषा के माध्यम से *दृश्य और ध्वनि बिम्ब* रचे गए हैं – जैसे “खिड़की से आती हवा उसके मन को सहलाने लगती थी।” यह वाक्य न केवल दृश्य का वर्णन करता है, बल्कि *भावना* और *अनुभूति* को भी स्पर्श करता है। जो पाठक को दृश्य अनुभूति के साथ-साथ मानसिक अनुभूति भी प्रदान करते हैं।

वाक्य संरचना और भाषाई प्रवाह

संक्षिप्तता में सार्थकता - लेखक की शैली का प्रमुख गुण है - *संक्षिप्तता में गहराई*। वे अत्यधिक शब्दों का प्रयोग नहीं करते, बल्कि छोटे वाक्यों से ही बड़ा भाव प्रस्तुत करते हैं। वाक्य उस *अदृश्य संबंध* की ओर इशारा करता है, जो प्रत्यक्ष न होकर भी प्रभावी होता है।

उदाहरण: “वह खिड़की नहीं दिखती अब... पर कभी-कभी महसूस होती है।”

“खिड़की बंद थी, पर वह उसका होना महसूस करता था।”

यहाँ पर भाषा आत्मा को स्पर्श करती है। यह *भावात्मक चमत्कार* भाषा की लघुता में छिपा है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(2), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

प्रश्नात्मक और संवादात्मक वाक्य प्रयोग - रचना में कई स्थानों पर *प्रश्नों* और *आंतरिक संवाद* का उपयोग है, जो पाठक के मन में हलचल उत्पन्न करता है।

उदाहरण: "क्या खिड़की अब भी वहीं है?" — यह प्रश्न केवल भौतिक खिड़की के बारे में नहीं, बल्कि *आशा की शेष संभावनाएँ* भी है।

शब्द चयन और अर्थवत्ता

बहुस्तरीय शब्दावली - रचना में प्रयुक्त शब्द का एक *सीधा अर्थ* होता है और एक *गूढ़ संकेत* भी। जैसे *खिड़की, दीवार, धूप, हवा, दरार* आदि बहुस्तरीय अर्थ रखते हैं। वे केवल भौतिक वस्तुएँ नहीं हैं, बल्कि मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक प्रतीक भी हैं। शब्द *विचारों के वाहक* बनते हैं और अनुभूति के अलग स्तर पर पहुंच जाते है।

व्यंजनात्मकता (Suggestiveness) - रचना में कई शब्द ऐसे हैं जो सीधा अर्थ नहीं बताते, बल्कि *संकेत करते हैं,* जिससे पाठक में अर्थ खोलने की प्रक्रिया शुरू होती है। यह शैली पाठक को सक्रिय बनाती है।

उदाहरण: "खिड़की की तरफ देखना अब भी अच्छा लगता है।" यह वाक्य *आशा, स्मृति और अनुभूति* का मिश्रण है, जिसे एक सामान्य क्रिया में समेटा गया है।

संवेदनात्मक भाषा का सौंदर्य

भावनाओं की मौन प्रस्तुति - कहानी में लेखक ने सीधे भाव नहीं बोले, बल्कि उन्हें सूक्ष्म संकेतों द्वारा व्यक्त किया है। जैसे - "वह रोज़ उस दीवार के पास बैठता था। बिना कुछ कहे, बस बैठता था।" यह वाक्य एक व्यक्ति के भीतर की *शून्यता* और *अंतरंग स्मृति* को प्रकट करता है, बिना किसी भारी-भरकम शब्दों के। -"उसने खिड़की के पास जाकर सांस ली... और उसे लगा कि कहीं कुछ बाकी है।" यहाँ "सांस लेना" मात्र क्रिया नहीं, बल्कि *आत्मिक अनुभव* और *संवेदना* का प्रतीक बन जाता है।

आत्म-संवाद की भाषा - कई वाक्य आत्म-संवाद के रूप में आते हैं जो पाठक के भीतर के प्रश्नों को जगा देते हैं। ये *द्वंद्वात्मक वाक्य* , जो रचना की भाषा को जीवंत बनाते हैं।

प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक आलोचना

यह कहानी केवल व्यक्तिगत भावनाओं की नहीं, बल्कि *सामाजिक यथार्थ की गूढ़ आलोचना* भी है।

- दीवार - जाति, वर्ग, धर्म और पितृसत्ता जैसी रूढ़ियों का रूप है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(2), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

- खिड़की - संवाद, समानता और लोकतंत्र की आकांक्षा का प्रतीक है।

कहानी में भाषा का प्रयोग केवल सौंदर्यात्मक नहीं, बल्कि *चेतनात्मक* भी है।

अंतर्ध्वनि और पाठोत्तर प्रभाव

रचना की भाषा में ऐसी *अंतर्ध्वनि* है, जो पाठ के समाप्त होने के बाद भी पाठक के मन में गूंजती रहती है। यह *कथ्य और भाषा का संयुक्त चमत्कार* है। अंतिम वाक्य: "अब वह खिड़की नहीं रही... लेकिन कभी-कभी हवा फिर भी आ जाती है।" यह वाक्य न केवल कथा का सारांश है, बल्कि उसकी आत्मा भी है।

अन्य भाषिक विशेषताएँ

- **रूपक प्रयोग**: दीवार और खिड़की रूपक हैं, जो कथा को दर्शन के स्तर पर ले जाते हैं।
- **वैयक्तिकता और सार्वभौमिकता** : भाषा में ऐसी संतुलित तटस्थता है, कि यह किसी व्यक्ति की भी हो सकती है और समूचे समाज की भी।
- **मौलिकता**: रचना की भाषा न तो अति साहित्यिक है, न ही सर्वथा बोलचाल की - यह एक *संतुलित मौलिक शैली* है जो विवेक शुक्ला की विशेष पहचान बनाती है।

लेखक विवेक शुक्ला ने सामान्य वस्तुओं को असामान्य रूप में प्रस्तुत करने का कार्य किया है। दीवार और खिड़की जैसे आम शब्दों को उन्होंने *नए अर्थ* और *संवेदना* दी है। यह रचनात्मकता भाषा का एक सशक्त चमत्कार है। "दीवार में एक खिड़की रहती थी" न केवल एक मार्मिक और संवेदनशील कहानी है, बल्कि यह भाषा के स्तर पर भी अत्यंत समृद्ध और अभिनव प्रयोगों से युक्त है। विवेक शुक्ला की भाषा में *प्रतीकात्मकता, संवेदना, लय, संक्षिप्तता, प्रश्नात्मकता, वैयक्तिकता* और *कल्पनाशीलता* का ऐसा संयोजन है जो *भाषाई चमत्कार* की पराकाष्ठा को दर्शाता है।

यह रचना हिंदी साहित्य के पाठकों को यह बताती है कि *कम शब्दों में गहन भावनाएँ* कैसे संप्रेषित की जा सकती हैं। साथ ही, यह रचना यह प्रमाणित करती है कि भाषा केवल संप्रेषण का माध्यम नहीं, बल्कि एक *अनुभूति का विस्तार* भी हो सकती है। "दीवार में एक खिड़की रहती थी" भाषा के स्तर पर एक अनुपम कृति है। यह दिखाता है कि कैसे भाषा से न केवल कथा कही जाती है, बल्कि *भावों को झकझोरा* जा सकता है।

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :9.014(2025); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
PEER REVIEWED AND REFEREED INTERNATIONAL JOURNAL
(Fulfilled Suggests Parametres of UGC by IJMER)
Volume:14, Issue:7(2), July, 2025
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed : Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available : www.ijmer.in

Cover Page

11. संदर्भ सूची :-

1. **विवेक शुक्ला** – *दीवार में एक खिड़की रहती थी,* प्रथम प्रकाशन: साहित्यिक पत्रिका "हंस", 2014 (संभावित स्रोत)
2. **रामदरश मिश्र**, *हिंदी कथा साहित्य में प्रतीकवाद*, साहित्य विमर्श, 2016
3. **डॉ. नामवर सिंह**, *आलोचना और संवेदना*, राजकमल प्रकाशन, 2008
4. **कृष्ण बलदेव वैद**, *भाषा की संवेदना*, भारतीय भाषा परिषद, 2011
5. "हिंदी लघुकथा: संरचना और संवेदना", संपादक: सुकेश साहनी, लघुकथा संगम
6. *हंस पत्रिका*, जुलाई 2015 अंक - जिसमें समकालीन लघुकथाओं की विशेष चर्चा
7. **शोध पत्र**: डॉ. सुरेखा सिंह, "समकालीन हिंदी लघुकथा में भाषा का प्रयोग", हिंदी अध्ययन जर्नल, दिल्ली विश्वविद्यालय, 2020
8. **YouTube** वीडियो साक्षात्कार - "Vivek Shukla: Samkalin Laghukatha aur Bhasha", प्रस्तुति - साहित्य कला अकादमी
9. **विवरण पत्रिका**